भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा के चतुर्थ दीक्षांत समारोह के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान का सम्बोधन

(दिनांक 03.08.2022, समय– पूर्वा० 11:50 बजे, स्थान–बी०एन० मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा)

बाबा सिंहेश्वरनाथ महादेव की इस पवित्र भूमि पर स्थित भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षांत समारोह में शामिल होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मैं सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं महान समाजवादी नेता स्व० भूपेन्द्र नारायण मंडल को श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ, जिनके नाम पर इस विश्वविद्यालय का नामकरण किया गया है।

यह हर्ष का विषय है कि वर्ष 1992 में स्थापित भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लगातार समाज के सभी वर्गों के बीच ज्ञान का प्रकाश फैलाने में महती भूमिका निभा रहा है। कोरोना महामारी के कठिन दौर में भी आप सब ने जिस निष्ठा और समर्पण के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन किया है, वह अत्यंत सराहनीय है। इस महामारी के कारण विश्वविद्यालय ने कई विद्वान शिक्षकों एवं लगनशील कर्मचारियों को खोया है। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

पहले भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय का विस्तार कोसी एवं सीमांचल के सात जिलों में था, लेकिन मार्च, 2018 में इसके सीमांचल क्षेत्र को पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ के रुप में स्वतंत्र मान्यता मिलने के बाद अब इस विश्वविद्यालय के अंतर्गत कोसी प्रमण्डल के 03 जिलों यथा–मधेपुरा, सहरसा एवं सुपौल के कुल 14 अंगीभूत एवं 17 सम्बद्ध महाविद्यालय आते हैं, जहाँ मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा, चिकित्सा एवं विधि संकाय के विभिन्न विषयों में उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था है।

मुझे बताया गया कि इस विश्वविद्यालय में युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने और उनके कौशल विकास हेतु बी०बी०ए०, बी०सी०ए०, बी०टी०एस०पी०, बायोटेक, बी०एड०, एम०एड० एवं पुस्तकालय विज्ञान आदि से संबंधित कई व्यावसायिक एवं रोजगारपरक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर रूचि आधारित (Choice based) क्रेडिट सिस्टम लागू किया गया है और नए नियम–परिनियम के अनुरूप पीएच० डी० पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। यहाँ लगातार शैक्षणिक सेमिनारों, सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं का आयोजन भी होता रहा है। इस विश्वविद्यालय के प्रतिभाशाली विद्यार्थीगण भारत एवं विदेशों में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवायें दे रहे हैं।

हमारे देश में 'दीक्षांत समारोह' की परंपरा भी सदियों पुरानी है। प्राचीन ग्रंथ 'उपनिषद्' में भी इसका उल्लेख मिलता है। इस अवसर पर गुरू अपने शिष्यों को सत्य बोलने, कर्तव्य का पालन करने और स्वाध्याय में आलस्य नहीं करने की दीक्षा देते थे। यह दीक्षा आज भी प्रासंगिक है और हम सब को इसे मन, वचन एवं कर्म से अपनाने की जरूरत है।

भारत की प्राचीन गौरवशाली शिक्षा व्यवस्था में बिहार का बहुमूल्य योगदान रहा है। यहाँ के नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय की पूरी दुनिया में ख्याति रही है। हमें अपने इस गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेते हुए अपने उज्ज्वल भविष्य की नई राह बनानी है। इस दिशा में बिहार सरकार द्वारा कई कदम उठाए जा रहे हैं।

21वीं सदी की जरूरतों और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का निर्माण किया गया है, जिसके लागू होने पर शिक्षकों का उत्तरदायित्व काफी बढ़ जायेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इस नीति के क्रियान्वयन और इसके उद्देश्यों की पूर्ति में भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय सक्रिय भूमिका निभायेगा।

आज के दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने वाले आप सभी छात्र–छात्राओं को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। आज आपके जीवन का एक सोपान पूर्ण हुआ, जहाँ से आपको क्रमशः आगे बढ़ते जाना है। आप हमेशा याद रखें कि 'दीक्षांत समारोह' शिक्षा का अंत नहीं है, बल्कि यह एक नई शुरूआत है। आप अपने अर्जित ज्ञान को और अधिक विस्तृत करने के साथ–साथ दूसरों के साथ बाँटें। मैं आपसे उम्मीद करता हूँ कि आप अपने क्षेत्र में सर्वोच्च मुकाम हासिल कर राष्ट्र के विकास और मानवता के कल्याण में अपना सर्वोत्तम योगदान देंगे। मेरी कामना है कि हमारे छात्र–छात्राओं में विद्वता के साथ–साथ नैतिक मूल्यों को धारण करने एवं उच्चादर्शों पर चलने की भरपूर इच्छा शक्ति एवं क्षमता हो।

दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए मैं भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय परिवार को साधुवाद देता हूँ और छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।

***